Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (निबंध वर्षा ऋतु)

पुस्तक - वीवा हिंदी व्याकरण - 7

प्यारे बच्चो, सुप्रभात!
आज हम निबंध के बारे में फिर से पढ़ेंगे। निबंध का अर्थ है एक सूत्र में बँधी हुई रचना। यह किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है। साधारणतया निबंध के विषय परिचित विषय ही होते हैं। जिनके बारे में हम सुनते, देखते व पढ़ते रहते हैं; जैसे- धार्मिक व राष्ट्रीय त्योहार, वातावरण, दर्शनीय स्थल तथा अन्य विषय।

* निबंध की रूपरेखा बनाकर अपने विचारों को व्यवस्थित रूप देना चाहिए।
* भाषा सरल, स्पष्ट तथा प्रभावशाली होनी चाहिए।
* आरंभ, मध्य अथवा अंत में किसी उक्ति अथवा विषय से संबंधित कविता या पंक्तियों का उल्लेख करना चाहिए।
* सभी अनुच्छेद एक-दूसरे से जुड़े होने चाहिए।
* उपसंहार प्रभावशाली होना चाहिए।
* वर्तनी व भाषा की शुद्धता, लेख की स्वच्छता एवं विराम-चिह्नों के प्रयोग पर ध्यान देना चाहिए।

मुख्य रूप से निबंध के तीन अंग होते हैं :-

1. भूमिका :- यह निबंध के आरंभ में एक अनुच्छेद में लिखी जाती है। इसमें में विषय का परिचय दिया जाता है। यह प्रभावशाली होनी आवश्यक है, जो पाठक को निबंध पढ़ने के लिए प्रेरित करे।
2. विषय विस्तार :- इसमें तीन या चार अनुच्छेदों में अपने विचार प्रकट किए जाते हैं। प्रत्येक अनुच्छेद में एक-एक पहलू पर विचार प्रकट कर लिखा जाता है।

Scanned with CamScanner

कक्षा - सातवीं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (निबंध ('वर्षा ऋतु')

3. उपसंहार :- यह निबंध के अंत में लिखा जाता है। इसमें सार के रूप में अनुच्छेद लिखा जाता है तथा संदेश भी लिखा जाता है।

बच्चो! अब मैं ऋतुओं की रानी 'वर्षाऋतु' पर निबंध पढ़ाऊँगी। आजकल आप देख ही रहे हैं कि वर्षा चारों ओर हो रही है।

'वर्षाकाल' या 'वर्षाऋतु'

जब भूतल तवा-सा जलता है, गरम हवा के थपेड़ों से पेड़-पौधे, फूल तथा लताएँ झुलस जाते हैं, प्राणी निढाल हो जाते हैं, चहुँ ओर त्राहि-त्राहि मच जाती है तब हम आकाश की ओर मुँह उठाकर ताकते हैं और मनौती मनाते हैं कि ईश्वर! अब शीघ्र वर्षा करो।

हमारी पुकार सुनी गई। ग्रीष्म के बाद बरसात आई। मेघ ने झड़ी लगाई। जंगल में मंगल हो गया। जिधर देखो उधर ही हरियाली दिखाई देने लगी। तब जाकर सबकी जान-में-जान आई। ईश्वर का धन्यवाद किया। छोटे-छोटे नदी-नाले पानी से भर गए। सभी कल-कल का गीत सुनाते हुए बहने लगते हैं। मयूर भी मेघों का स्वागत अपनी सुरीली वाणी से तथा नाचकर करते हैं। मेंढकों की टर्र-टर्र, झींगुरों की झंकार और जुगनुओं की चमक से रात्रि आनंदमय बन जाती है।

ऐसे ही सुहावने मौसम में तीज का त्योहार आता है। पेड़ों की डालियों पर झूले पड़े होते हैं। स्त्रियाँ मल्हार से सावन मास का स्वागत करती हैं। सभी सखी-सहेलियाँ प्रेम पूर्वक गीत गाती हैं। उनका हृदय उल्लास से भर जाता है।

पावस ऋतु में पके आमों की बहार होती है।

Scanned with CamScanner

कक्षा- सातवीं   सुमन शर्मा
विषय - हिंदी व्याकरण (निबंध 'वर्षाऋतु')

देशी आम का टपका बड़ा गुणकारी होता है। यह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। इन आमों को चूसने के बाद दूध पीने से शक्ति बढ़ती है। कभी नीलगगन में इंद्रधनुष की निराली छटा बालकों का मनोरंजन खेल बन जाती है।

कृषक की बाँछें खिल जाती हैं। खेतों में हल जोता जाता है और पुरवैया हवा अपना राग अलापती है। ग्वाले पशुओं को तालाबों में छोड़कर बागों में आनंद उठाते हैं। वृक्ष-लता की हरियाली की तरह मनुष्यों का हृदय भी हरा-भरा हो जाता है।

मक्का, ज्वार, बाजरे के लहलहाते खेत किसान को नवजीवन प्रदान करते हैं। इंद्रधनुष की झलक, मेघों की कड़क, बिजली की चमक कवियों के हृदयों में नई-नई कल्पनाएँ जगाने लगती है। लोकनायक तुलसीदास ने भी रामचरित मानस में पावस ऋतु का इस तरह वर्णन किया है -

वर्षाकाल मेघ नभ छाए। गर्जत लागत परम सुहाए॥
दामिनि दमकि रही घन माहीं। खल की प्रीति यथा थिर नाहीं॥

पावस ऋतु में मेंढकों का टर्राना भी बहुत प्रिय लगता है।

दादुर धुनि चहुँ ओर सुहाई।
पढ़हि वेद जिमि बटु समुदाई॥

पावस ऋतु में सुख-शान्ति की लहर दौड़ने पर मलेरिया आदि का प्रकोप हो जाता है। अतः ऐसे अवसर पर मानव जाति को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

अंत में यह मानना ही पड़ेगा कि यदि वसंत ऋतुओं का राजा है तो वर्षा ऋतुओं की रानी।

बच्चो! वर्षा ऋतु के बारे में पढ़ा। आपने अनुभव किया होगा कि इस ऋतु में मन प्रफुल्लित हो जाता है।

गृहकार्य :- सब बच्चे इस कराए गए कार्य को और अब वर्षाऋतु का मौसम है। इसे अपने अनुभव के आधार पर लिखेंगे।

(अंतिम पृष्ठ-3)